पाठ 17

वरदान माँगूँगा नहीं

(प्रस्तुत कविता से कवि के स्वाभिमान और आत्मविश्वास का परिचय मिलता है।)

यह हार एक विराम है

जीवन महासंग्राम है

तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं ,

वरदान माँगूँगा नहीं।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए

अपने खंडहरों के लिए

यह जान लो मैं विश्व की सम्पत्ति चाहूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

क्या हार में क्या जीत में

किंचित नहीं भयभीत मैं

संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही,

वरदान माँगूँगा नहीं।

लघुता न अब मेरी छुओ

तुम हो महान बने रहो

अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

चाहे हृदय को ताप दो

चाहे मुझे अभिशाप दो

कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

पद्मभूषण से सम्मानित 'शिवमंगल सिंह' का जन्म सन् 1916 ई0 में उत्तर प्रदेश स्थित उन्नाव जिले में हुआ था। इन्होंने हिन्दी विषय में एम0 ए0 और पी-एच0 डी0 की उपाधियाँ प्राप्त कीं। बाल्यावस्था से ही इन्होंने काव्य रचना करनी प्रारम्भ कर दी थी, 'सुमन' उपनाम

से इन्होंने कविताओं का लेखन किया। उनके काव्य संग्रह हैं- 'हिल्लोल', 'पर आँखें भरी नहीं', 'जीवन के मान' 'प्रलय सृजन' और 'विश्वास बढ़ता ही गया'। 27नवम्बर सन् 2002 में इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

महासंग्राम = महान संघर्ष, जीवन में आने वाली कठिनाइयों से लड़ने का भाव। **प्रहर** = पहर-एक दिन का आठवाँ भाग। **ताप** = कष्ट। **अभिशाप** = शाप, बद्दुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. हम बहता जल पीने वाले,

मर जाएंगे भूखे-प्यासे।

कहीं भली है कटुक निबौरी,

कनक कटोरी की मैदा से।।

उपर्युक्त कविता भी श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी की ही है। दोनों कविताओं में क्या समानता तथा क्या अन्तर है? लिखिए।

2. 'जीवन महासंग्राम है' के समान भाव की कुछ सूक्तियाँ एकत्र करके लिखिए।

विचार और कल्पना

1. कवि दया की भीख नहीं लेना चाहता, इस संबंध में आपके क्या विचार हैं, लिखिए?

2. 'यह भी सही, वह भी सही' का प्रयोग किन परिस्थितियों के लिए किया गया है?

3. कविता के मूल भाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक 'वरदान माँगँूगा नहीं' क्यों रखा गया होगा ? इस कविता के और क्या-क्या शीर्षक हो सकते हैं ?

कविता से

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कवि तिल-तिल मिट जाने के बाद भी किस बात के लिए तैयार नही हैं ?

(ख) संघर्ष पथ पर चलते हुए कवि का संकल्प क्या है ?

(ग) कर्तव्यपथ के विषय मंे कवि का दृढ़ संकल्प क्या है ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों को उनके सही अर्थ से मिलाइए-

(क) क्या हार में क्या जीत में जीवन स्वयं ही महासंघर्ष है इसमें हार को

किंचित नहीं भयभीत मैं। क्षणिक विश्राम के रूप में लेना चाहिए।

(ख) मैं विश्व की सम्पत्ति हार हो या जीत, मैं जरा भी चाहूँगा नहीं। भयभीत नहीं।

(ग) यह हार एक विराम है, मैं संसार की सम्पदा की

जीवन महासंग्राम है। कामना नहीं करूँगा।

3. कविता में जीवन को महासंग्राम क्यों कहा गया है?

भाषा की बात

1. इस कविता में एक पंक्ति है "क्या हार में क्या जीत में" इसमें एक ही पंक्ति में 'हार' और 'जीत' दो परस्पर विलोम शब्द आए हैं। आप भी कुछ ऐसी पंक्तियाँ बनाइए जिनमें दो परस्पर विलोम शब्द एक साथ आए हों, जैसे- क्या सुख में क्या दुःख में।

2. पाठ में आए तुकान्त शब्द छाँटकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. जन = लोग। (जन-जन की आवाज है - हम सब एक हैं।)

जान = प्राण। (क्या बताऊँ, वह हमेशा मेरी जान के पीछे पड़ा रहता है।)

ऊपर के शब्दों (जन-जान) में केवल एक मात्रा के हेर-फेर से उनके उच्चारण और अर्थ दोनों ही बदल गये हैं। नीचे कुछ शब्द-युग्म दिये जा रहे हैं, उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए तथा ऐसे पाँच शब्द-युग्म आप भी ढूँढ़िए। सुत-सूत, नीर-नीड़, मन-मान, कुल-कूल, क्रम-कर्म

4. तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख नहीं लूँगा, क्योंकि-

(1) जीवन एक विराम है।

(2) जीवन महासंग्राम है।

(3) जीवन बहुत अल्प है।

(4) जीवन मंे बहुत आराम है।

5. स्मृति सुखद प्रहरांे के लिए क्या नहीं चाहूँगा ?

(1) विश्व की सम्पत्ति। (2) खण्डहर।

(3) दीर्घायु। (4) कर्तव्य

6. किन-किन परिस्थितियों में कवि अपने कर्तव्य-पथ से हटना नहीं चाहता है ?

(1) हृदय को ताप एवं अभिशाप प्राप्त होने पर।

(2) भयभीत होने पर।

(3) धमकाने पर।

(4) प्रताड़ित होने पर।

इसे भी जानें

खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' है। इस कृति पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया गया है।